FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 1 of 8



# पाठ 12
# संवदिया

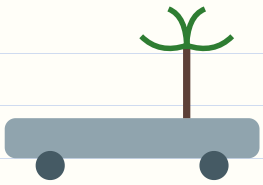

हमरो संवाद ले जाहु रे संवदिया

फणीश्वरनाथ 'रेणु' · आंचलिक कहानी · NCERT अंतरा भाग 2 · CBSE 002 · 2026-27

## पाठ का मानचित्र (★ = परीक्षा के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण)

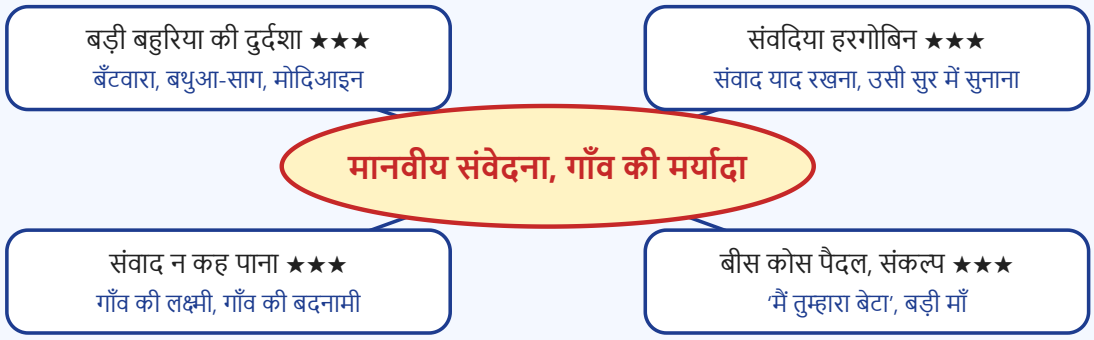


## लेखक परिचय

**फणीश्वरनाथ 'रेणु'** (सन् **1921–1977**)। जन्म बिहार के **पूर्णिया** ज़िले के **औराही हिंगना** गाँव में। 1942 के 'भारत छोड़ो' आंदोलन और नेपाल के राणाशाही-विरोधी आंदोलन में भाग; प्रगतिशील विचारधारा। 1953 से साहित्य-सृजन। हिंदी के प्रमुख **आंचलिक कथाकार**: अंचल-विशेष का जीवन, आंचलिक शब्द-मुहावरे; '**आत्मा के शिल्पी**'। कहानी-संग्रह: **ठुमरी**, अगिनखोर, आदिम रात्रि की महक; '**तीसरी कसम उर्फ़ मारे गए गुलफ़ाम**' पर फ़िल्म; उपन्यास: **मैला आँचल**, **परती परिकथा**। प्रेमचंद की विरासत को नई भंगिमा दी।

★ **परीक्षा-सुझाव:** सबसे अधिक पूछा गया गद्य पाठ: 2024 (बिंहपुर पहुँचने पर हरगोबिन की मनःस्थिति), 2025 (संवाद न पहुँचाना कितना उचित + व्याख्या), 2026 (अंतिम दृश्य की व्याख्या + 'कैसे लिखें कहानी' में चरित्र-चित्रण के तरीके)।

**कथा-सार:** जलालगढ़ गाँव की **बड़ी हवेली** अब नाममात्र की बड़ी है: बड़े भैया की एक घंटे की बीमारी में मृत्यु के बाद तीनों देवरों ने झगड़कर बँटवारा किया (ज़ेवर छीने, बनारसी साड़ी के तीन टुकड़े), रैयतों ने ज़मीन दबा ली, देवर शहर जा बसे; अकेली **बड़ी बहुरिया** बथुआ-साग खाकर दिन काट रही है, उधार न चुकाने पर मोदिआइन ताने देती है। वह गाँव के **संवदिया हरगोबिन** को अपनी माँ (थाना बिंहपुर) के पास संवाद भेजती है कि उसे यहाँ से ले जाएँ, नहीं तो वह पोखरे में डूब मरेगी। हरगोबिन कटिहार होते हुए बिंहपुर पहुँचता है, पर 'गाँव की लक्ष्मी' के गाँव छोड़ने और गाँव की बदनामी के डर से संवाद नहीं कह पाता; झूठ बोलकर लौटता है। पैसे कम होने से कटिहार से **बीस कोस पैदल** चलकर भूखा-प्यासा जलालगढ़ पहुँचते ही बेहोश हो जाता है। होश आने पर बड़ी बहुरिया के पैर पकड़कर माफ़ी माँगता है और संकल्प करता है: 'मैं तुम्हारा बेटा, तुम सारे गाँव की माँ हो, मैं तुम्हारा सब काम करूँगा, गाँव छोड़कर मत जाओ।' बड़ी बहुरिया भी संवाद भेजकर पछता रही थी।

## 12.1 पात्र और महत्त्वपूर्ण गद्यांश ★★★

**हरगोबिन (संवदिया)**: जलालगढ़ का संदेशवाहक; बिना मज़दूरी गाँव-गाँव संवाद पहुँचाता है; संवाद का हर शब्द याद रखने और उसी सुर-स्वर में सुनाने वाला; अत्यंत **संवेदनशील** (बड़ी बहुरिया के साथ रोना, भोजन न कर पाना, नींद न आना); **गाँव की मर्यादा** का रखवाला (गाँव की लक्ष्मी गाँव कैसे छोड़े); **स्वाभिमानी** (राह-खर्च न लेना, भाई से 'किसी बात की कमी नहीं' कहना); **ईमानदार** (बासमती चूड़ा की एक मुट्ठी भी न खाना); **कर्तव्य और संवेदना के द्वंद्व** में फँसा; अंत में ज़िम्मेदार 'बेटा' बनने का संकल्प।

**बड़ी बहुरिया**: बड़ी हवेली की 'लक्ष्मी'; कभी नौकर-नौकरानियों से घिरी, अब स्वयं सूप में अनाज फटकती है; विधवा, असहाय, स्वजनों (देवरों) द्वारा ठगी गई; स्वाभिमानी (मोदिआइन को जवाब न देना, आँखों के इशारे से चुप रहना); भावुक; अंत में संवाद भेजने पर **पछताती** है और हरगोबिन की सेवा करती है।

**अन्य**: **मोदिआइन** (उधार वसूलने वाली, 'काबुली' नाम से चिढ़ती); **देवर-देवरानियाँ** (स्वार्थी, अगहनी धान और आम के मौसम में आकर अनाज-आम ले जाते: 'राक्षस हैं सब'); **बूढ़ी माता और बड़े भाई** (स्नेही, बेटी को बुलाना चाहते हैं); **चिड़चिड़ा यात्री**; **निरगुन गाने वाला सूरदास**।

★ **परीक्षा-सुझाव: संवदिया की विशेषताएँ (NCERT 1):** संवाद का प्रत्येक शब्द याद रखना; जिस सुर-स्वर में सुनाया गया, उसी ढंग से जाकर सुनाना; विश्वासपात्र, गोपनीयता रखने वाला; 'आदमी भगवान के घर से संवदिया बनकर आता है'। **गाँववालों की अवधारणा:** निठल्ला, कामचोर, पेटू; 'न आगे नाथ, न पीछे पगहा'; बिना मज़दूरी संवाद ढोने वाला 'औरतों का गुलाम'; मीठी बोली सुनकर नशे में आ जाने वाला।

**गद्यांश 1 (2025 व्याख्या):** '"हरगोबिन भाई, तुमको एक संवाद ले जाना है। आज ही। बोलो, जाओगे न?"... "और कितना कड़ा करूँ दिल?... माँ से कहना, मैं भाई-भाभियों की नौकरी करके पेट पालूँगी। बच्चों की जूठन खाकर एक कोने में पड़ी रहूँगी, लेकिन यहाँ अब नहीं... अब नहीं रह सकूँगी।... कहना, यदि माँ मुझे यहाँ से नहीं ले जाएगी तो मैं किसी दिन गले में घड़ा बाँधकर पोखरे में डूब मरूँगी।... बथुआ-साग खाकर कब तक जीऊँ? किसलिए... किसके लिए?"'

> **उत्तर:** पूर्ण व्याख्या 'CBSE बोर्ड प्रश्न' पृष्ठ पर। **मुख्य बिंदु:** बड़ी बहुरिया की **असहायता और निराशा**; मायके में भाभियों की नौकरानी बनकर रहना भी स्वीकार, पर ससुराल का अपमान-अभाव नहीं; आत्महत्या की धमकी में चरम पीड़ा; 'किसलिए... किसके लिए?': जीवन का उद्देश्य खो देना।

**गद्यांश 2 (2026 व्याख्या, अंतिम दृश्य):** 'हरगोबिन होश में आया।... बड़ी बहुरिया का पैर पकड़ लिया, "बड़ी बहुरिया!... मुझे माफ़ करो। मैं तुम्हारा संवाद नहीं कह सका।... तुम गाँव छोड़कर मत जाओ। तुमको कोई कष्ट नहीं होने दूँगा। मैं तुम्हारा बेटा! बड़ी बहुरिया, तुम मेरी माँ, सारे गाँव की माँ हो! मैं अब निठल्ला बैठा नहीं रहूँगा। तुम्हारा सब काम करूँगा।... बोलो, बड़ी माँ, तुम... तुम छोड़कर चली तो नहीं जाओगी?" बड़ी बहुरिया गरम दूध में एक मुट्ठी बासमती चूड़ा डालकर मसकने लगी।... संवाद भेजने के बाद से ही वह अपनी गलती पर पछता रही थी।'

> **उत्तर:** पूर्ण व्याख्या 'CBSE बोर्ड प्रश्न' पृष्ठ पर। **मुख्य बिंदु:** हरगोबिन का पश्चात्ताप, संकल्प और मातृ-भाव; 'निठल्ला' होने के आरोप से मुक्ति; बड़ी बहुरिया का मौन स्नेह (माँ का भेजा चूड़ा हरगोबिन को खिलाना) और पछतावा: **मानवीय संवेदना की जीत**।

**कहानी का उद्देश्य:** असहाय, सहनशील नारी की पीड़ा; संयुक्त परिवार और ज़मींदारी के विघटन का यथार्थ; गाँव के संबंधों की आत्मीयता और मर्यादा; कर्तव्य बनाम संवेदना का द्वंद्व; मानवता की विजय।

# NCERT अभ्यास, पूरी तरह हल

1. संवदिया की क्या विशेषताएँ हैं और गाँववालों के मन में संवदिया की क्या अवधारणा है?

**उत्तर: विशेषताएँ:** संवाद के प्रत्येक शब्द को याद रखना; जिस सुर-स्वर में संवाद सुनाया गया, ठीक उसी ढंग से जाकर सुनाना; गोपनीयता; सेवा-भाव (बिना मज़दूरी)। लेखक के अनुसार यह काम सब नहीं कर सकते, 'आदमी भगवान के घर से संवदिया बनकर आता है।' **गाँववालों की अवधारणा:** निठल्ला, कामचोर, पेटू आदमी ही संवदिया बनता है; उसकी न कोई ज़िम्मेदारी ('न आगे नाथ न पीछे पगहा'); बिना मज़दूरी संवाद पहुँचाने वाला औरतों का गुलाम; ज़रा-सी मीठी बोली से नशे में आ जाने वाला।

2. बड़ी हवेली से बुलावा आने पर हरगोबिन के मन में किस प्रकार की आशंका हुई?

**उत्तर:** उसे आश्चर्य हुआ कि आज जब गाँव-गाँव डाकघर खुल गए हैं, तब भी किसी को संवदिया की ज़रूरत क्यों पड़ी। वातावरण 'सूँघकर' उसने अनुमान लगाया कि निश्चय ही कोई **गुप्त समाचार** ले जाना है, जिसे चाँद-सूरज, परेवा-पंछी तक न जानें।

3. बड़ी बहुरिया अपने मायके संदेश क्यों भेजना चाहती थी?

**उत्तर:** पति की मृत्यु के बाद देवरों ने बँटवारा करके सब छीन लिया और शहर जा बसे; रैयतों ने ज़मीन दबा ली; अब उसके पास खाने को कुछ नहीं, वह बथुआ-साग खाकर जी रही थी; उधार देने वाले ताने देते थे (मोदिआइन); नौकर भी भाग गया था; वह अकेली, असहाय थी। इसलिए वह माँ से कहलवाना चाहती थी कि उसे मायके बुला लें, वह भाभियों की नौकरी करके, बच्चों की जूठन खाकर भी रह लेगी; नहीं तो वह डूब मरेगी।

4. हरगोबिन बड़ी हवेली में पहुँचकर अतीत की किन स्मृतियों में खो जाता है?

**उत्तर:** उसे याद आता है कि कभी बड़ी हवेली में दिन-रात नौकर-नौकरानियों और मज़दूरों की भीड़ रहती थी; बड़ी बहुरिया के हाथों में केवल मेहँदी लगाकर गाँव की नाइन परिवार पालती थी। बड़े भैया की एक घंटे की बीमारी में मृत्यु; तीनों भाइयों का झगड़ा; रैयतों का ज़मीन पर कब्ज़ा; बड़ी बहुरिया की देह से ज़ेवर छीनकर बँटवारा; बनारसी साड़ी के तीन टुकड़े: 'द्रौपदी चीरहरण लीला'।

5. संवाद कहते वक्त बड़ी बहुरिया की आँखें क्यों छलछला आईं?

**उत्तर:** वह बड़ी हवेली की लक्ष्मी थी, जो कभी सुख-समृद्धि में थी; आज उसे अपनी दुर्दशा का संवाद मायके भेजना पड़ रहा था। ससुराल छोड़ने की विवशता, अपमान, अभाव, अकेलेपन और आत्मसम्मान को ठेस की पीड़ा के कारण उसकी आँखें छलछला आईं और वह सिसकने लगी।

6. गाड़ी पर सवार होने के बाद संवदिया के मन में काँटे की चुभन का अनुभव क्यों हो रहा था? उससे छुटकारा पाने के लिए उसने क्या उपाय सोचा?

**उत्तर:** बड़ी बहुरिया के संवाद का हर शब्द (किसके भरोसे यहाँ रहूँगी? नौकर भाग गया, गाय भूखी-प्यासी हिकर रही है, मैं किसके लिए दुख झेलूँ?) उसके मन में काँटे की तरह चुभ रहा था। **उपाय:** उसने पास बैठे यात्री से बातचीत करने की कोशिश की (थाना बिंहपुर में गाड़ी रुकती है या नहीं), पर वह चिड़चिड़ा निकला; फिर वह संवाद को मन-ही-मन दुहराने लगा।

7. बड़ी बहुरिया का संवाद हरगोबिन क्यों नहीं सुना सका?

**उत्तर:** (1) उसे लगा कि बड़ी बहुरिया गाँव की लक्ष्मी है, वह गाँव छोड़ देगी तो गाँव में क्या रह जाएगा; (2) सुनने वाले उसके गाँव का नाम लेकर थूकेंगे कि कैसा गाँव है जहाँ लक्ष्मी जैसी बहुरिया दुख भोग रही है: **गाँव की बदनामी** का डर; (3) बूढ़ी माता को दुखी करने का साहस न हुआ; (4) बड़ी हवेली की मर्यादा। इसलिए उसने झूठ बोला कि 'कोई संवाद नहीं'।

8. 'संवदिया डटकर खाता है और अफर कर सोता है' से क्या आशय है?

**उत्तर:** संवदिया जिसके घर संवाद लेकर जाता है, वहाँ उसकी खूब आवभगत होती है; वह भरपेट खाता और निश्चिंत होकर गहरी नींद सोता है (यही गाँववालों की धारणा भी है)। पर हरगोबिन बड़ी बहुरिया के दुख के कारण न ठीक से खा सका, न सो सका: यह उसकी संवेदनशीलता दिखाता है।

9. जलालगढ़ पहुँचने के बाद बड़ी बहुरिया के सामने हरगोबिन ने क्या संकल्प लिया?

> **उत्तर:** उसने बड़ी बहुरिया के पैर पकड़कर माफ़ी माँगी कि वह संवाद नहीं कह सका, और संकल्प लिया: 'तुम गाँव छोड़कर मत जाओ, तुम्हें कोई कष्ट नहीं होने दूँगा; मैं तुम्हारा बेटा हूँ, तुम मेरी माँ, सारे गाँव की माँ हो; मैं अब निठल्ला नहीं बैठूँगा, तुम्हारा सब काम करूँगा।'

10. 'डिजिटल इंडिया' के दौर में संवदिया की क्या कोई भूमिका हो सकती है?

> **उत्तर:** संदेश पहुँचाने का काम अब मोबाइल, ईमेल, सोशल मीडिया तुरंत कर देते हैं, इसलिए संवदिया का पारंपरिक काम लगभग समाप्त है। पर संवदिया की **मानवीय भूमिका** (भावनाओं को समझकर संवेदनशीलता से बात पहुँचाना, बुज़ुर्गों और तकनीक से अनजान लोगों की मदद, आपसी विश्वास, मध्यस्थता) आज भी प्रासंगिक है। तकनीक संदेश पहुँचाती है, संवेदना नहीं।

## भाषा-शिल्प (NCERT)

1. अर्थ: काबुली-कायदा, रोम-रोम कलपने लगा, अगहनी धान

> **उत्तर: काबुली-कायदा:** काबुलीवाले (गुल मुहम्मद आगा) की तरह उधार देकर ज़ोर-जुल्म से एक का दो वसूलने का तरीका। **रोम-रोम कलपने लगा:** अत्यधिक दुखी होना, हृदय विचलित होना। **अगहनी धान:** अगहन (मार्गशीर्ष) महीने में कटने वाली धान की फ़सल।

2. प्रश्नवाचक वाक्य और उन पर टिप्पणी

> **उत्तर:** 'फिर उसकी बुलाहट क्यों हुई?' (हरगोबिन की जिज्ञासा-आशंका); 'कहाँ गए वे दिन?' (हवेली के बीते वैभव पर दुख); 'बथुआ-साग खाकर कब तक जीऊँ? किसलिए... किसके लिए?' (बड़ी बहुरिया की निराशा); 'किस मुँह से वह ऐसा संवाद सुनाएगा?' (गाँव की मर्यादा का द्वंद्व); 'वह झूठ क्यों बोला?' (आत्म-ग्लानि)। प्रश्नवाचक वाक्य पात्रों के अंतर्द्वंद्व और भावनाएँ सजीव करते हैं।

3. व्याख्या (संक्षेप में)

> **उत्तर:** (क) **बड़ी हवेली अब नाममात्र को ही बड़ी हवेली है**: कभी समृद्ध, नौकरों से भरी हवेली अब बँटवारे और विघटन से उजड़ गई, केवल नाम बचा। (ख) **द्रौपदी की चीरहरण लीला**: जैसे भरी सभा में द्रौपदी का अपमान हुआ, वैसे ही देवरों ने बड़ी बहुरिया के ज़ेवर छीने, बनारसी साड़ी फाड़कर बाँटी: स्त्री के अपमान और स्वार्थ की पराकाष्ठा। (ग) **बथुआ-साग खाकर कब तक जीऊँ?**: घोर अभाव, निराशा, जीवन से थक जाना। (घ) **किस मुँह से वह ऐसा संवाद सुनाएगा**: गाँव की लक्ष्मी के दुख का संवाद सुनाने में लज्जा, गाँव की बदनामी का डर।

★ **परीक्षा-सुझाव: 'कैसे लिखें कहानी' (अभिव्यक्ति और माध्यम) से जोड़ (2026 Q6-iii):** 'संवदिया' में चरित्र-चित्रण के तरीके: पात्रों का आत्मकथन (हरगोबिन का मन-ही-मन सोचना), संवाद और अंतर्द्वंद्व, व्यवहार-क्रियाकलाप (भोजन न करना, बीस कोस पैदल), घटनाक्रम और दृश्य, अन्य पात्रों के कथन (गाँववालों की धारणा), लेखक का स्वगत कथन।

# CBSE बोर्ड प्रश्न 2024–2026, हल सहित

CBSE 2025 · 29/1/1 हरगोबिन संवदिया था, उसके द्वारा बड़ी बहुरिया के संवाद को न पहुँचाने को आप कहाँ तक उचित मानते हैं? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए। (40 शब्द) [2]

> **उत्तर:** (मुक्त उत्तर; किसी एक पक्ष में तर्क) **पक्ष में:** संवदिया होने से पहले हरगोबिन एक मनुष्य था; उसमें मानवीय संवेदनाएँ थीं; बड़ी हवेली से उसका संपन्नता के दिनों से जुड़ाव था; बड़ी बहुरिया के दुख का वर्णन उसके मायके में करने से उसकी और उसके गाँव की बदनामी होती; इसलिए न कहना उचित। **विपक्ष में:** संवदिया का कर्तव्य अच्छा-बुरा हर संवाद पहुँचाना है; बड़ी बहुरिया की वास्तविक स्थिति से उसके मायके को परिचित कराना उसका दायित्व था; न कहकर उसने कर्तव्य से विश्वासघात किया।

CBSE 2024 · 29/1/1 'संवदिया' कहानी के आधार पर लिखिए कि बिंहपुर स्टेशन पहुँचने पर हरगोबिन की मनःस्थिति कैसी थी। (40 शब्द) [2]

> **उत्तर:** थाना बिंहपुर पहुँचते ही हरगोबिन का जी भारी हो गया; पहले भी वह कई भले-बुरे संवाद लेकर आया था, पर कभी ऐसा नहीं हुआ। उसके पैर गाँव की ओर बढ़ ही नहीं रहे थे। वह सोचने लगा कि इसी पगडंडी से बड़ी

बहुरिया हमेशा के लिए मायके लौट आएगी; गाँव की लक्ष्मी गाँव छोड़ देगी तो गाँव में क्या रह जाएगा? किस मुँह से वह ऐसा संवाद सुनाएगा; लोग उसके गाँव पर थूकेंगे। वह **दुविधा, ग्लानि और अनिच्छा** से भरा था।

CBSE 2025 · 29/1/1 सप्रसंग व्याख्या: गद्यांश 1 ('हरगोबिन भाई, तुमको एक संवाद ले जाना है... किसलिए... किसके लिए?') [6]

**उत्तर: संदर्भ (1):** पाठ '**संवदिया**', लेखक **फणीश्वरनाथ 'रेणु'**, अंतरा भाग 2। **प्रसंग (1):** बड़ी बहुरिया हरगोबिन को बुलाकर अपनी माँ के पास संवाद ले जाने को कहती है। **व्याख्या (3):** बड़ी बहुरिया हरगोबिन से उसी दिन अपनी माँ के पास संवाद ले जाने को कहती है। संवाद सुनाते समय वह सिसकने लगती है; बड़ी हवेली की लक्ष्मी को इस तरह रोते देख हरगोबिन की आँखें भी भर आती हैं और वह उसे दिल कड़ा करने को कहता है। बड़ी बहुरिया कहती है कि अब और कितना कड़ा करूँ? माँ से कहना कि मैं भाई-भाभियों की नौकरी करके, बच्चों की जूठन खाकर एक कोने में पड़ी रहूँगी, पर अब यहाँ नहीं रह सकती; यदि माँ मुझे नहीं ले गई तो मैं गले में घड़ा बाँधकर पोखरे में डूब मरूँगी। बथुआ-साग खाकर कब तक जीऊँ, किसके लिए? यहाँ बड़ी बहुरिया की घोर विवशता, अपमान, अभाव और निराशा व्यक्त हुई है। **विशेष (1):** आंचलिक भाषा (बथुआ-साग, पोखरे, जीऊँ); प्रश्न शैली; संवादात्मकता; करुण दृश्य; नारी की असहायता।

CBSE 2026 · 29/1/1 सप्रसंग व्याख्या (100 शब्द): गद्यांश 2 ('हरगोबिन होश में आया... संवाद भेजने के बाद से ही वह अपनी गलती पर पछता रही थी।') [6]

**उत्तर: संदर्भ (1):** पाठ 'संवदिया', लेखक फणीश्वरनाथ 'रेणु', अंतरा भाग 2। **प्रसंग (1):** संवाद न कह पाने के बाद हरगोबिन बीस कोस पैदल चलकर जलालगढ़ पहुँचते ही बेहोश हो गया; होश आने पर वह बड़ी बहुरिया से बात करता है। **व्याख्या (3):** होश में आते ही हरगोबिन बड़ी बहुरिया के पैर पकड़ लेता है और माफ़ी माँगता है कि वह उसका संवाद नहीं कह सका। वह विनती करता है कि बड़ी बहुरिया गाँव छोड़कर न जाए; वह उसे कोई कष्ट नहीं होने देगा। वह कहता है: 'मैं तुम्हारा बेटा हूँ, तुम मेरी माँ हो, सारे गाँव की माँ हो।' वह संकल्प करता है कि अब निठल्ला नहीं बैठेगा, उसका सारा काम करेगा, और बार-बार पूछता है कि वह गाँव छोड़कर तो नहीं जाएगी। बड़ी बहुरिया कुछ नहीं कहती; वह माँ के भेजे बासमती चूड़े को गरम दूध में मसलने लगती है (हरगोबिन को खिलाने के लिए)। संवाद भेजने के बाद से ही वह अपनी गलती पर पछता रही थी। यहाँ हरगोबिन का पश्चात्ताप, ग्राम-प्रेम, मातृभक्ति और बड़ी बहुरिया का मौन स्नेह प्रकट होता है। **विशेष (1):** भावपूर्ण संवाद; 'मैं तुम्हारा बेटा' में मानवीय संबंधों की आत्मीयता; बिंदुओं (...) से टूटी-टूटी भावुक वाणी; कहानी का मार्मिक, सुखद अंत; आंचलिक शब्द (बड़ी माँ, चूड़ा, मसकना)।

## अभ्यास सेट: स्वयं को परखें परीक्षा-शैली

### A. रिक्त स्थान भरिए (1 अंक)

1. हरगोबिन _____ गाँव का संवदिया था।
2. बड़ी बहुरिया का मायका _____ में था।
3. बँटवारे में _____ साड़ी के तीन टुकड़े किए गए।
4. बड़ी बहुरिया _____ खाकर गुज़ारा कर रही थी।
5. मोदिआइन _____ के नाम से चिढ़ती थी।
6. बूढ़ी माता ने बेटी के लिए _____ का चूड़ा भेजा।
7. हरगोबिन कटिहार से जलालगढ़ _____ कोस पैदल चला।
8. 'मैला आँचल' _____ का उपन्यास है।

### B. सही या गलत (1 अंक)

1. हरगोबिन ने बड़ी बहुरिया से राह-खर्च ले लिया।
2. हरगोबिन ने बूढ़ी माता को सही संवाद सुना दिया।
3. बड़ी बहुरिया संवाद भेजकर पछता रही थी।
4. देवर बड़ी बहुरिया की खोज-खबर लेते रहते थे।
5. गाड़ी में निरगुन गाने वाले सूरदास के गीत से हरगोबिन का जी स्थिर हुआ।

6. हरगोबिन ने चूड़ा में से थोड़ा खा लिया।
7. रेणु आंचलिक कथाकार हैं।
8. बड़े भैया की मृत्यु लंबी बीमारी से हुई।

## C. अति लघु उत्तरीय (1 अंक)

1. 'संवदिया' का अर्थ लिखिए।
2. 'रैयत' का अर्थ लिखिए।
3. 'परेवा' का अर्थ लिखिए।
4. 'हिकर' का अर्थ लिखिए।
5. काबुलीवाले का नाम क्या था?
6. 'आगे नाथ न पीछे पगहा' का अर्थ लिखिए।
7. हरगोबिन ने बूढ़ी माता से कौन-सा झूठ बोला?
8. रेणु के दो कहानी-संग्रहों के नाम लिखिए।

## D. लघु उत्तरीय (2 अंक)

1. देवर-देवरानियों के व्यवहार को लेखक ने 'राक्षस' जैसा क्यों कहा?
2. मोदिआइन 'काबुली' नाम से क्यों चिढ़ती थी?
3. कटिहार स्टेशन पर हरगोबिन को 'सुराज' का अनुभव कैसे हुआ?
4. भोजन की थाली देखकर हरगोबिन को क्या याद आया?
5. हरगोबिन को रात भर नींद क्यों नहीं आई?
6. बड़े भाई के राह-खर्च पूछने पर हरगोबिन ने क्या कहा और क्यों?
7. हरगोबिन ने चूड़े में से एक मुट्ठी भी क्यों नहीं खाई?
8. 'नैहरा को सुख सपन भयो अब' गीत का हरगोबिन पर क्या प्रभाव पड़ा?
9. जलालगढ़ पहुँचते-पहुँचते हरगोबिन की दशा कैसी हो गई?
10. कहानी का शीर्षक 'संवदिया' कितना उपयुक्त है?

## E. विचारात्मक (3 अंक, 60 शब्द)

1. हरगोबिन के चरित्र की विशेषताएँ लिखिए।
2. बड़ी बहुरिया की दुर्दशा के कारणों पर प्रकाश डालिए।
3. 'संवदिया' में संयुक्त परिवार के विघटन का चित्रण कीजिए।
4. 'संवदिया' में आंचलिकता के तत्त्व स्पष्ट कीजिए।
5. 'संवदिया' कहानी में कर्तव्य और संवेदना का द्वंद्व स्पष्ट कीजिए।

## F. अंतर्पाठीय

1. बड़ी बहुरिया और 'सूरदास की झोंपड़ी' की सुभागी की स्थिति की तुलना कीजिए।
2. हरगोबिन के ग्राम-प्रेम और 'जहाँ कोई वापसी नहीं' के विस्थापितों के ग्राम-प्रेम की तुलना कीजिए।

## G. उच्च चिंतन (HOTS)

1. विधवा स्त्रियों के प्रति समाज का दृष्टिकोण बदलने के उपाय लिखिए।
2. यदि आप हरगोबिन होते तो क्या करते? तर्क सहित लिखिए।

# बहुविकल्पी प्रश्न: 20 MCQs

1. 'संवदिया' के लेखक:
   (A) भीष्म साहनी (B) प्रेमचंद (C) फणीश्वरनाथ 'रेणु' (D) निर्मल वर्मा

2. 'संवदिया' का अर्थ:
   (A) संदेशवाहक (B) गायक (C) सिपाही (D) किसान

3. हरगोबिन किस गाँव का था?
(A) बिंहपुर (B) कटिहार (C) सिरसिया (D) जलालगढ़

4. बड़ी हवेली की दुर्दशा कब शुरू हुई?
(A) बाढ़ से (B) बड़े भैया की मृत्यु के बाद (C) डकैती से (D) अकाल से

5. बँटवारे में किसके तीन टुकड़े हुए?
(A) हवेली (B) बनारसी साड़ी (C) गाय (D) ज़ेवर

6. हरगोबिन ने बँटवारे को किस रूप में देखा?
(A) राम-वनवास (B) लंका-दहन (C) महाभारत (D) द्रौपदी चीरहरण लीला

7. बड़ी बहुरिया क्या खाकर जी रही थी?
(A) बथुआ-साग (B) चूड़ा-दही (C) दाल-भात (D) फल

8. बड़ी बहुरिया ने राह-खर्च के लिए कितने रुपए का नोट निकाला?
(A) एक (B) दो (C) पाँच (D) दस

9. हरगोबिन किस गाड़ी से गया?
(A) बस (B) शाम की गाड़ी (C) मालगाड़ी (D) दस बजे की गाड़ी

10. हरगोबिन ने बूढ़ी माता से क्या कहा?
(A) सही संवाद (B) कोई संवाद नहीं (C) बड़ी बहुरिया बीमार है (D) बड़ी बहुरिया आ रही है

11. हरगोबिन ने संवाद क्यों नहीं सुनाया?
(A) भूल गया (B) डर गया (C) गाँव की बदनामी और लक्ष्मी के गाँव छोड़ने के भय से (D) माता सो रही थी

12. बूढ़ी माता ने बेटी के लिए क्या भेजा?
(A) बासमती धान का चूड़ा (B) पैसे (C) दही (D) साड़ी

13. हरगोबिन का टिकट कहाँ तक का था?
(A) जलालगढ़ (B) कटिहार (C) बरौनी (D) खगड़िया

14. कटिहार से जलालगढ़ की दूरी:
(A) दस कोस (B) पाँच कोस (C) बीस कोस (D) पचास कोस

15. गाड़ी में किसके गीत से हरगोबिन का जी स्थिर हुआ?
(A) किसी के नहीं (B) बाउल के (C) भजन-मंडली के (D) निरगुन गाने वाले सूरदास के

16. होश में आकर हरगोबिन ने क्या कहा?
(A) मैं तुम्हारा बेटा हूँ (B) मैं जा रहा हूँ (C) मुझे पैसे दो (D) संवाद सुना दिया

17. बड़ी बहुरिया अंत में क्या कर रही थी?
(A) गरम दूध में चूड़ा मसक रही थी (B) रो रही थी (C) सामान बाँध रही थी (D) सो रही थी

18. 'काबुली-कायदा' का अर्थ:
(A) अफ़गानी कानून (B) मीठा बोलना (C) व्यापार (D) उधार वसूलने का ज़ोर-ज़ुल्म भरा तरीका

19. 'मैला आँचल' किसकी रचना है?
(A) प्रेमचंद (B) रेणु (C) यशपाल (D) अज्ञेय

20. 'संवदिया' की भाषा की विशेषता:
(A) अंग्रेज़ी प्रधान (B) संस्कृतनिष्ठता (C) आंचलिकता (D) उर्दू प्रधान

1 (C) · 2 (A) · 3 (D) · 4 (B) · 5 (B) · 6 (D) · 7 (A) · 8 (C) · 9 (D) · 10 (B) · 11 (C) · 12 (A) · 13 (B) · 14 (C) · 15 (D) · 16 (A) · 17 (A) · 18 (D) · 19 (B) · 20 (C)

## कथन-कारण (6)

(A) दोनों सही, कारण सही व्याख्या। (B) दोनों सही, कारण सही व्याख्या नहीं। (C) कथन सही, कारण गलत। (D) कथन गलत, कारण सही।

1. कथन: हरगोबिन भोजन नहीं कर सका। कारण: उसे लगा कि बड़ी बहुरिया बथुआ-साग उबालकर खा रही होगी।
2. कथन: हरगोबिन बीस कोस पैदल चला। कारण: उसके पास केवल कटिहार तक के टिकट के पैसे थे।
3. कथन: बड़ी बहुरिया के देवर उसका ध्यान रखते थे। कारण: वे फ़सल के समय आकर अनाज ले जाते थे।
4. कथन: हरगोबिन ने बूढ़ी माता को सच्चा संवाद सुना दिया। कारण: वह गाँव की बदनामी से डरता था।
5. कथन: हरगोबिन ने बड़ी बहुरिया को माँ कहा। कारण: वह उसे गाँव की लक्ष्मी और सारे गाँव की माँ मानता था।
6. कथन: 'संवदिया' आंचलिक कहानी है। कारण: रेणु ने 'भारत छोड़ो' आंदोलन में भाग लिया।

उत्तर: 1 (A) · 2 (A) · 3 (D) · 4 (D) · 5 (A) · 6 (B)

## उत्तर

**A.** 1. जलालगढ़ 2. थाना बिंहपुर 3. बनारसी 4. बथुआ-साग 5. काबुली 6. बासमती धान 7. बीस 8. रेणु

**B.** 1. गलत (इनकार किया) 2. गलत (झूठ बोला) 3. सही 4. गलत (खोज-खबर नहीं लेते) 5. सही 6. गलत (एक मुट्ठी भी नहीं) 7. सही 8. गलत (एक घंटे की बीमारी)

**C.** 1. संदेशवाहक 2. प्रजा 3. कबूतर, तेज़ उड़ने वाला पक्षी 4. बेचैन होकर पुकारना 5. गुल मुहम्मद आगा 6. कोई ज़िम्मेदारी न होना 7. कोई संवाद नहीं, सिरसिया आया था तो दर्शन करने आ गया 8. ठुमरी, अगिनखोर

**D.** 1. वे केवल फ़सल (धान, आम) के समय आकर अनाज ले जाते, कभी खोज-खबर नहीं लेते। 2. काबुली ने उधार वसूली में ज़ुल्म किया; उसकी पिटाई के बाद लोग उसे काबुली से जोड़कर चिढ़ाते थे। 3. भोंपे से गाड़ी-प्लेटफ़ॉर्म की सूचना मिलना, पूछताछ की ज़रूरत न रहना। 4. बड़ी बहुरिया बथुआ-साग उबालकर खा रही होगी। 5. झूठ बोलने की ग्लानि, कर्तव्य-संवेदना का द्वंद्व, बड़ी बहुरिया की सिसकती छवि। 6. 'किसी बात की कमी नहीं': स्वाभिमान, गाँव की प्रतिष्ठा। 7. वह माँ की बेटी के लिए सौगात थी: ईमानदारी। 8. जी थोड़ा स्थिर हुआ। 9. भूख-प्यास-थकान से लड़खड़ाया, भ्रमित होकर बेहोश हो गया। 10. पूरी कथा संवदिया के कर्तव्य, द्वंद्व और संवेदना पर केंद्रित: उपयुक्त।

**E.** 1. संवेदनशील, ग्राम-प्रेमी, स्वाभिमानी, ईमानदार, कर्तव्यनिष्ठ, द्वंद्वग्रस्त, संकल्पवान। 2. पति की मृत्यु, देवरों का स्वार्थ-बँटवारा, रैयतों का कब्ज़ा, अकेलापन, कर्ज़, समाज की उपेक्षा। 3. बड़े भैया की मृत्यु के बाद झगड़ा, बँटवारा, शहर पलायन, बड़ी बहुरिया का अकेलापन। 4. आंचलिक शब्द (बथुआ-साग, चूड़ा, पोखरा, मायजी, बबुआ), लोकगीत, लोक-विश्वास, ग्राम्य जीवन। 5. संवाद पहुँचाना कर्तव्य; बड़ी बहुरिया व गाँव की मर्यादा के प्रति संवेदना; अंत में संवेदना की जीत।

**F.** 1. दोनों स्त्रियाँ पीड़ित, असहाय; सुभागी को पति पीटता है, बड़ी बहुरिया को देवरों ने लूटा। 2. दोनों में गाँव और भूमि से गहरा लगाव।

**G.** स्वतंत्र उत्तर।

## अंतिम-रात सारांश (परीक्षा से पहले)

- रेणु (1921–1977), औराही हिंगना (पूर्णिया); आंचलिक कथाकार, 'आत्मा के शिल्पी'; मैला आँचल, परती परिकथा; ठुमरी; तीसरी कसम।
- बड़ी हवेली: नाममात्र की बड़ी; बड़े भैया की मृत्यु, देवरों का झगड़ा, रैयतों का दखल, ज़ेवर छीने, बनारसी साड़ी के तीन टुकड़े (द्रौपदी चीरहरण); बथुआ-साग; मोदिआइन, काबुली-कायदा।
- संवाद (व्याख्या 2025): भाई-भाभियों की नौकरी, बच्चों की जूठन, गले में घड़ा बाँध पोखरे में डूबना, किसलिए-किसके लिए; पाँच रुपए का नोट; 'मैं तुम्हारी राह देख रही हूँ'।
- संवदिया: शब्द-शब्द याद, उसी सुर में; गाँववालों की धारणा: निठल्ला, पेटू, औरतों का गुलाम। कटिहार (भोंपा, सुराज), थाना बिंहपुर पर जी भारी (2024), गाँव की लक्ष्मी, थूकेंगे; झूठ: 'कोई संवाद नहीं', दशहरा में गंगा मेले; भोजन न कर पाना; रात भर नींद नहीं; बासमती चूड़ा।
- वापसी: टिकट कटिहार तक, बीस कोस पैदल, सूरदास का निरगुन, भ्रम, बेहोशी; अंत (व्याख्या 2026): पैर पकड़कर माफ़ी, 'मैं तुम्हारा बेटा, तुम सारे गाँव की माँ', निठल्ला नहीं रहूँगा; बड़ी बहुरिया दूध में चूड़ा मसकती, पछतावा। न कहना उचित? (2025: दोनों पक्ष)।